महामत चोए मूं धणी, मूंके वडी डेखारई रांद।
कर मूंसे मिठ्यूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! आपने मुझे बहुत बड़ा खेल दिखाया। अब, हे मेरे रसिया! आप मेरे से रस भरी मीठी-मीठी बातें करो।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ५२४ ।।

आगे के तीन प्रकरण सिन्धी के हिन्दुस्तानी में किए हैं।

आसिक के गुनाह

सुनो रूहें अर्स की, जो अपनी बीतक।
जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक।। १ ।।

हे मेरी परमधाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है। जैसी उलटी बात हमसे हो गई है, ऐसी कोई नहीं करता।

कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए।। २ ।।

उनका विवरण बताती हूं। दोनों कानों से ध्यान से सुनना। मैंने विचार कर देखा है। तुम भी विचार करना।

पीछे जो दिल में आवे साथ के, आपन करेंगे सोए।
भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए।। ३ ।।

पीछे जो सुन्दरसाथ के दिल में आएगी हम वही करेंगे। जिससे गलती होती है, वह निश्चित ही हाथ पटक कर रोता है।

तिस वास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर।। ४ ।।

इस वास्ते अब सुन्दर अवसर जो हाथ में आया है उसमें गलती न करें। पहले से ही सावधान होकर आगे देख कर चलो, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन।
चलना देख के केहेत हों, ए अकल दई तुमें किन।। ५ ।।

हम रूहें इस संसार में धनी की आशिक कहलाती हैं। मैं यहां का चलना (व्यवहार) देखकर कहती हूं। तुमको यह अक्ल किसने दी?

लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज की हकीकत को लेकर संसार के लोगों को बताना आशिक का काम नहीं है, जो हम कर रहे हैं।

Nijanand App

मीठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए।
पड़ोसी पण ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए।।७।।

आशिक रूहें माशूक श्री राजजी महाराज की छिपी बातें किसी से नहीं कहतीं। यहां तक कि पड़ोसी भी सुन नहीं पाते, इस तरह से छिपकर रोती हैं।

आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान।
सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान।।८।।

आशिक उनको कहते हैं जो अपने प्रीतम पर कुर्बान हो जाएं और सौ तरीके से श्री राजजी महाराज के गुझ सुख लें।

जो पड़े कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख।
किसी सों ना बोलहीं, छिपावे हक के सुख।।९।।

भले ही करोड़ों कठिनाइयां आएं, पर वह अपने दुःख की बात किसी को नहीं कहतीं। वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज के सुख छिपाकर रखती हैं, किसी से कहतीं नहीं।

गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमिन।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन।।१०।।

मोमिनों के साथ रहकर भी अपने माशूक के सुख एकान्त में लेती हैं और अपने धनी की गुझ (गुह्य) बातों को किसी के आगे नहीं कहतीं।

तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार।
पर कहा कहूं मैं तिनको, जो बाहेर करें पुकार।।११।।

उनके आगे भी नहीं कहतीं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं। मैं उनको क्या कहूं जो बाहर जाकर चिल्लाते हैं।

हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत।।१२।।

अपने धनी समय पर परमधाम बुलाते हैं, पर हम खेल में रहना चाहते हैं। श्री राजजी महाराज की छिपी बातों को लेकर दुनियां को उनकी हकीकत बताते हैं।

ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक।
दुख कुफर में पड़ के, सुख बका छोड़े इस्क।।१३।।

आशिक कभी ऐसी गलती नहीं करते कि प्रीतम बुलाएं और वह न जाएं। इस झूठे संसार के दुःख में पड़कर अखण्ड परमधाम के इश्क का सुख छोड़ दें।

प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन।।१४।।

जिनको अपने प्रीतम प्यारे होते हैं, उनको अपने धनी की वाणी ही प्यारी होती है। जिसे अपना धनी प्यारा लगता है, वह किसी से कहती नहीं है।

Nijanand App

आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात।
केहेने सुख लोकन को, पाए विछोहा हक जात।। १५ ।।

आशिक रूह कभी भी ऐसी उल्टी बात नहीं करती जो अपने पति से बिछुड़कर संसार के लोगों को अपना सुख बताती फिरे।

आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत है रोए रोए।
ऐसी उलटी अकल आसिक की, सुख कहे औरों को सोए।। १६ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक के सुखों को रो-रोकर याद करती हैं, परन्तु हमारी यहां ऐसी उल्टी अक्ल हो गई है कि हम अपने धनी के सुखों को दूसरों को सुनाते फिरते हैं।

ए निपट बातें रिजालियां, सो आपन करी दिल धर।
जैसी हुई हमसे खेलमें, तैसी हुई न किनके सिर।। १७ ।।

यह बातें निश्चित ही बड़ी शर्मनाक हैं, जो हमने अपने दिल से कही हैं। जैसी गलती हमने यहां खेल में की है, ऐसी किसी ने आज तक नहीं की।

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार।
जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बे-एतबार।। १८ ।।

अपने को आशिक कहलाकर पति के बुलावे को लौटा देना अच्छा नहीं है। जो औरत खसम के बुलाने पर नहीं जाए वह औरत विश्वास की पात्र नहीं है।

गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए।
जो कई पड़ें कसाले, तो बाहेर माहें रोए।। १९ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी की छिपी बातें किसी से नहीं कहतीं। यदि करोड़ों कष्ट भी आएं तो अन्दर ही अन्दर रोती हैं।

एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए।। २० ।।

हमने एक तो श्री राजजी की छिपी बातों को जाहिर किया और दूसरा बुलाने पर नहीं गए। ऐसी गलती तो कोई एक भी नहीं करता। हमने दो-दो गलतियां कीं।

रूहों को ऐसी न चाहिए, अर्स की कहावें हम।
सहूर करके देखिया, तो हम किया बड़ा जुलम।। २१ ।।

हम परमधाम की अंगनाएं हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। अब विचार कर देखा कि हमने बड़ा जुल्म किया है।

हम कहें झूठी दुनियां, तिनमें ऐसी करे न कोए।
जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठोंसे न होए।। २२ ।।

हम कहते हैं कि दुनियां झूठी है। इस झूठी दुनियां में भी कोई ऐसा नहीं करता। जो गलती हम सच्चों ने की है, ऐसी गलती दुनियां के झूठे लोगों से भी नहीं होती।

Nijanand App

मैं देख तकसीर अपनी, पेहेले देख डरी एक बार।
देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार।। २३ ।।

मैं अपनी गलती देखकर एक बार तो डर गई। श्री राजजी महाराज को सामने देखकर डरी। तब मैंने दुनियां में जाहिर कर दिया।

मैं देखे गुनाह अपने, हक के देखे एहसान।
उमर गई पुकारते, बीच हलाकी जहान।। २४ ।।

मैंने अपने गुनाहों को देखा और श्री राजजी के एहसानों को देखा। इस दुःखदाई दुनियां में चिल्लाते-चिल्लाते उम्र बीत गई।

कबहूं किनहूं ना किए, ऐसे काम अधम।
देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम।। २५ ।।

ऐसे नीच काम इस दुनियां में किसी ने नहीं किए। मैंने अपने गुनाहों को देखा, तो लगा मैंने बहुत जुल्म किया है।

स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए।
खावंद जाने त्यों करे, हुआ बस हुकम के।। २६ ।।

समझदार औरत जान-बूझकर गलती नहीं करती। उसका धनी जैसा जाने वैसा करे। वह तो सदा हुकम के अधीन होती है।

जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी।
और किसीका ना चले, कोई करे स्यानप घनी।। २७ ।।

फिर से हम विचार करके देखें तो लगता है यह हकीकत श्री राजजी के हुकम से हुई है। चाहे कोई कितनी ही चतुराई करे, यहां किसी का कुछ नहीं चलता।

मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल।
और ना कोई कहूं, बिना हुकम नूरजमाल।। २८ ।।

मैंने श्री राजजी के इलम से देखा तो पता चला कि यह खेल श्री राजजी के हुकम का है। श्री राजजी के हुकम के बिना यहां और कुछ भी नहीं है।

ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर।
ए भी गुनाह खुदीय का, जब फेर देख्या सहूर कर।। २९ ।।

जब दिल में विचार किया तो अपने गुनाह दिखाई देने लगे। जब फिर से विचार करके देखा तो यह गुनाह भी मैखुदी, अर्थात् अहंकार का रूप है, पाया।

गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हुसियार।
देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार।। ३० ।।

जब मैं सावचेत (सतर्क) हुई तभी मुझे अपने गुनाह दिखाई पड़े। यह मैंने अपनी जो होशियारी बताई है, इसमें भी 'मैं' लगी है, जिससे मैं डरी और सावचेत हो गई।

Nijanand App

गुन्हे किए अजान में, गुन्हें देखे सो भी अजान।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दई पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गुनाह अनजाने में किए और अनजाने में ही देखे। जब राजजी महाराज ने पूरी पहचान दे दी तो हुकम ने बीच में सांस भी नहीं लेने दिया।

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाहीं मैं।। ३२ ।।

मैंने अपने आपको पहचान लिया। इसमें भी 'मैं' अहंकार का सूचक है। जिनसे मैं अलग हो गई। इसमें में भी 'मैं' शब्द आ गया। इस तरह से यह 'मैं' शब्द किसी तरह से निकलता ही नहीं।

महामत कहे ए मोमिनों, कोई नाहीं हक बिगर।
लाख बेर मैं देखिया, फेर फेर सहूर कर।। ३३ ।।

श्री महामति कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने बार-बार विचार करके लाख बार देखा तो पाया कि श्री राजजी महाराज के बिना कुछ है ही नहीं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ५५७ ।।

मैं खुदी की पेहेचान

मैं लाखों विध देखिया, कहूं खुदी क्योंए न जाए।
ए क्यों जावे पेड़से, जो दूजी हकें दई देखाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने लाखों तरह से देख लिया। यह मैखुदी किसी तरह से हटती नहीं। ठीक ही तो है। यह हटे कैसे? जब श्री राजजी ने ही इसे दूसरे रूप में (माया का रूप) दिखा दिया है।

जो मैं मांगों इस्क को, तो इत भी आप देखाए।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए।। २ ।।

मैं जो इश्क मांगती हूं तो यहां भी मै खुदी दिखाई देती है। यह आपके इलम ने अच्छी तरह से समझा दिया है। इसमें भी मुझे मै खुदी दिखाई दी।

हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज की पहचान किसको हुई है? दूसरा है ही कौन? खुदी की ऐसी बारीक बातें निकाल दें तभी श्री राजजी की पहचान होती है।

तन तो अपने अर्स में, सो तो सोए नींद में।
जागत हैं एक खावंद, ए नींद दई जिनने।। ४ ।।

अपने तन परमधाम में नींद में सोए पड़े हैं। एक श्री राजजी महाराज ही जागते हैं, जिन्होंने यह फरामोशी हमें दी है।

दे कर नींद रूहन को, खेल देखावत नजर।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिना हुकम कादर।। ५ ।।

रूहों को नींद देकर नजर के द्वारा खेल दिखाते हैं। तो फिर यह कौन खेल देख रहा है? क्या श्री राजजी के हुकम के बिना और कोई है भी?

Nijanand App